CLASS → ⑧ दक्षिण भारत का इतिहास [History of South India]

➤ पिछली कक्षा में हम सातवाहन वंश तक पढे जोकि शासन कर रहे थे महाराष्ट्र वाले क्षेत्र में (महाराष्ट्र को हम Central India में ही मानेंगे)

➤ आज की कक्षा में दक्षिण भारत में जायेंगे और वहाँ जानेंगे कि इसको हम 'संगम युग' क्यों बोल रहे है।

पहली कक्षा में •

पुरापाषाण काल (Palaeolithic) → Old + Stone age
→ मध्यपाषाण काल (Mesolithic) → Middle Stone Age
→ नवपाषाण काल (Neolithic) → New Stone Age
↓
ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic) → Copper (ताम्र) Stone age
(Chalcolithic sites खेतडी mines (राजस्थान), मलजखंड (M.P) इसी अधूरा में)

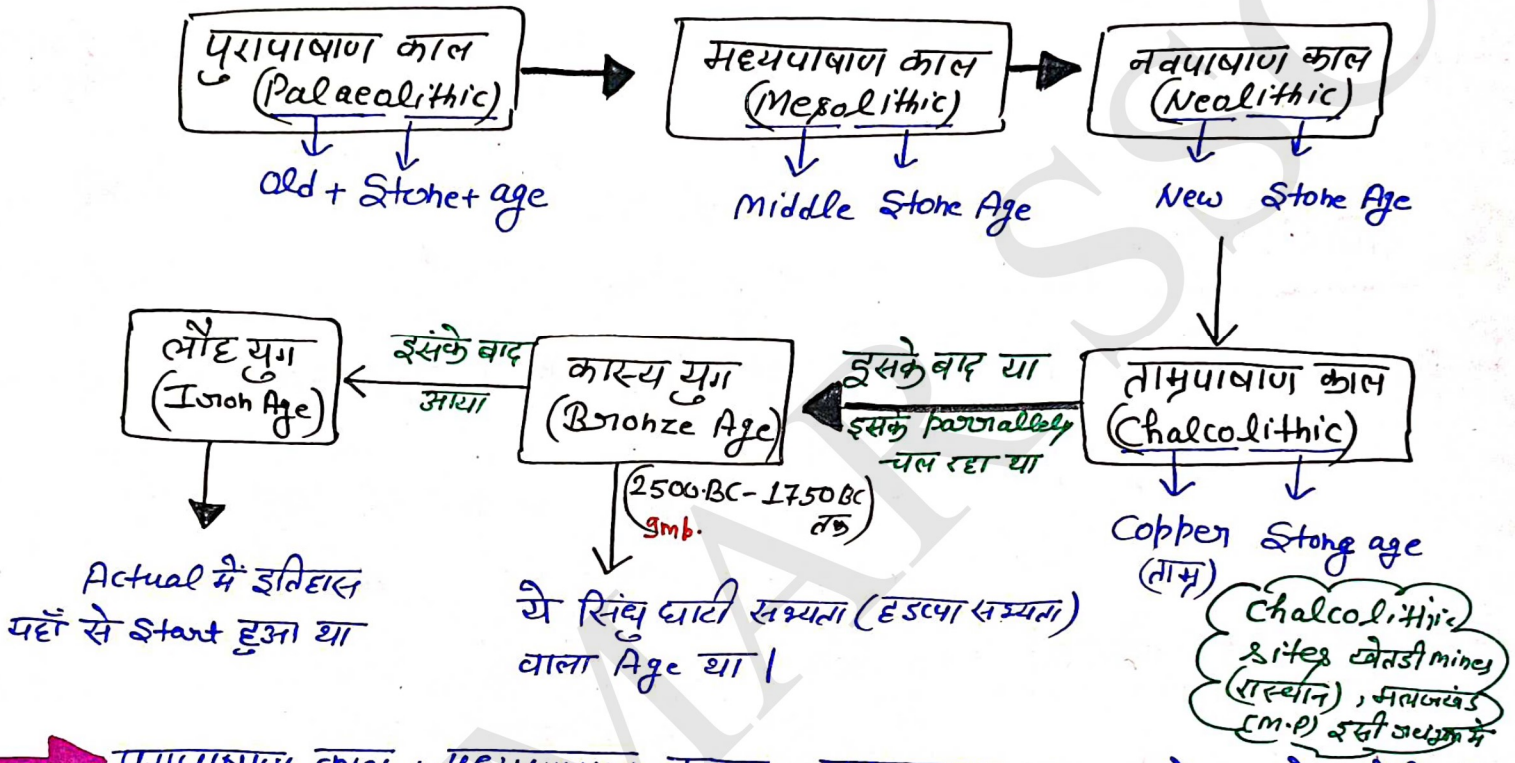

← इसके बाद या इसके parallely चल रहा था
कास्य युग (Bronze Age) (2500 BC – 1750 BC तक) Imp. → ये सिंधु घाटी सभ्यता (हडप्पा सभ्यता) वाला Age था।

← इसके बाद आया
लौह युग (Iron Age) → Actual में इतिहास यहाँ से Start हुआ था

➤ पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल, नवपाषाण काल को हमने प्रागैतिहासिक काल (Pre-Historic Era) बोला था।

➤ कास्य युग → आद्यऐतिहासिक काल (Proto-Historic Era) था क्योंकि यहाँ पर चीजें लिखी हुयी तो थी लेकिन हम पढ़ (Decifer) नही कर पाए।

➤ जो later vedic age है जहाँ से त्रयीवेद compile होना शुरू हुआ उसको हम कहते है कि actually इतिहास यहाँ से शुरू हुआ।

➤ अभी तक ये सब हमने उत्तर भारत (North India) का अवलोकन किया दक्षिण भारत में इस time क्या चल रहा था आइए जाने÷

➤ दक्षिण भारत में भी हमने कुछ पुरापाषाण स्थल (Palaeolithic sites) देखी थी, मध्यपाषाण स्थल और नवपाषाण स्थल भी देखे थे।

➤ लेकिन नवपाषाण के बाद हम उत्तर भारत में ही खो गये हमने दक्षिण भारत पर ध्यान ही नही दिया।

PARMAR SSC

→ क्योंकि वहाँ पर कास्य युग (Bronze Age) आया ही नहीं।

→ कारण :- काँसा (Bronze) एक मिश्रधातु (Alloy) है जो कॉपर (ताँबा) और टिन से मिलकर बनती है ; कॉपर तो दक्षिण भारत वाले राजस्थान वाले क्षेत्र से ले भी सके लेकिन टिन कहाँ से लायेगे (ये तो अफगानिस्तान वाले क्षेत्र मे मिलता था)

→ राजस्थान, म.प्र., महाराष्ट्र इसी क्षेत्र के आस-पास ताम्रपाषाण स्थल (Chalcolithic Sites) देखने को मिली।

→ दक्षिण भारत में कास्य युग (Bronze Age) (हड़प्पा वाला समय) कभी विकसित ही नहीं हुआ।

→ वहाँ पर इसकी जगह Develop हुआ → Megalithic Age (महापाषाण काल/युग) (2500BC से लेकर

लौह युग (Iron Age) भी बोलते है

→ मध्यपाषाण काल (Megalithic Age) को हमने सूक्ष्मपाषाण युग (Microlithic Age) बोला था।

→ पुरापाषाण काल में बड़े-बड़े Stone tools का उपयोग होता था, मध्यपाषाण काल में Stone tools छोटे-छोटे हो गए।

→ ये बड़े-बड़े पत्थर हमे कब्र (Graves) के आस पास मिले क्योंकि साथ मे कंकाल मिले, मिट्टी का बर्तन (Pottery) मिली, कुछ Iron के tools मिले।

→ उस time की मिट्टी की बर्तन (Pottery) मिली :- → काले और लाल मिट्टी के बर्तन

→ समुदाय (Community) :- चारावाह समुदाय (Pastoral Community)
इनको खेती (Agriculture) के बारे में पता तो था।

→ उत्तर भारत में (North India) में लौह युग जोकि वैदिक काल भी कहलाता है तो वहाँ Early Vedic Age (1500BC - 1000BC) मे पाया था कि इन लोगो को कृषि के बारे में पता था क्योंकि लोहे की खोज तो हो ही चुकी थी लेकिन अभी भी ये चारावाह ही थे purely कृषि पर निर्भर नही थे।

→ दक्षिण भारत का इतिहास → (चेर, चोल और पांड्य) इन तीन साम्राज्य से शुरु होती है।

PARMAR SSC

North में हमने पढ़ा कि किस तरह जन (आर्य) आए, जन से वो कैसे जनपद बने और जनपद से कैसे वो महाजनपद बने।

दक्षिण भारत में देखना है कि जो लौह युग के लोग थे वो चेर, चोल और पांड्य में transform हुए। ये पता लगेगा संगम वंश से

* संगम वंश (Sangam Dynasty) *

मतलब → सभा (Assembly)

यानि कि बड़े-बड़े विद्वान आए / भगवान आए और उन्होंने कुछ साहित्य (literatures) लिखे; और उस साहित्य से हमें पता चलता है कि किस तरह से ये महापाषाण लोग (Megalithic people) इन तीन Dynasties में बदले। (चेर, चोल और पांड्य)

कुल तीन संगम हुए; इनको मुख्यत: संरक्षण (Patronize) करने का जो काम किया था वो पांड्य ने किया था। यानि पांड्य राजाओं ने।

ये 3 सभाएं/संगम हुए → तमिल क्षेत्र → जिसको हम मुच्चंगम से जानते है।

* आइए तीनो संगम के बारे में जाने *

(किसने संरक्षण किया ये ज्यादा imp. नहीं है)

- प्रथम संगम → मदुरै में हुआ था। इसका संरक्षण (Patronize) किया था → अगस्त्य ने
- VV imp दूसरा संगम → कपाडापुरम में हुआ था। इसका संरक्षण किया → तोलकाप्पियर ने
- तीसरा संगम → मदुरै में हुआ था।

प्रथम संगम में जो साहित्य Compile हुआ वो हमें नहीं मिला। (बाद में बह गया)

दूसरे संगम में जो साहित्य बना → तोलकाप्पियम (imp) (प्रारंभिक तमिल पाठों (texts) में से एक) → Grammatically tamil text

* संगम साहित्य दो रूपों में *

- नैरेटिव (कहानी) Narrative
  - जो Narrative (कहानीनुमा) form में है उनको 'मैलकांन्क्कु' बोलते है।
  - इसमें (8) प्रमुख रचनाएं थी। (major works)
- उपदेशात्मक (काव्यात्मक) (Didactic)
  - जो काव्यात्मक form में है उनको 'किलकान्क्कु' बोलते है।
  - इसमें total (18) लघु कृतियाँ (minor work) थे

• ये हमे प्यार (love) या युद्ध (war) के बारे में बताता है।
प्यार को हमने तमिल भाषा में 'एकम' और युद्ध को 'पुरम' बोला जाता है।

अन्य दो text ÷

① **सिलापथिकम ÷** लिखा गया ÷ इलंगो आदिगल द्वारा लिखित (Elango)

* कोवलम (राजा) + कंन्नगी (पत्नी) + माधवी (दासी) की कहानी
* कोवलम को माधवी से प्रेम हो जाता है।
* यानि सिलापथिकम एक प्रेम कहानी (love story) है → कोवलम और माधवी की
* राजा अपनी पत्नि कन्नगी को घर से निकाल देते है लेकिन कन्नगी ईमानदार रहती है कोवलम के साथ और इंतजार करती है अपने पति के आने का।
* कंन्नगी ⟹ 'पतिव्रता और शुद्दता की देवी' कहा जाता।
  ↓ पुत्री

② **मनिमेगलाई ÷** कोवलम और माधवी के बेटी बारे में किताब
  → लेखक ÷ सत्तनार

PARMAR SSC

✱ दक्षिण भारत भूगोल (Geography) ✱

➡ संगम साहित्य से पता चलता है ➞ चेरा, चोल, पांड्य के बारे में

➡ इसी text से हमें इसकी Geography के बारे में पता चलता है कि ये जो भूमि थी जिसको तमिल भाषा में थिनैस (Thinais) बोलते है।

↓ part of area/land (Geographical)

थिनैस (Thinais)

ये Divide था 5 भागो में

- कुरिन्सी थिनै
- पलाई थिनै
- मुल्लई थिनै
- मरुटम थिनैइ
- नेयटल थिनैई

① **कुरिन्सी थिनैई** ÷ इस पर वो लोग रह रहे थे जो शिकार और एकत्रीकरण (Hunting and Gathering) करते थे। क्योकि ये एकदम central portion था। घने जंगल थे।

② **पलाई थिनै** ÷ मवेशी उठाना और चोरी/लूटपाट कर रहे थे।

③ **मुल्लई थिनई** ÷ 'पशुपालन' (Animal Husbandary) करते थे।

④ **मारुटम थिनई** ÷ 'खेती' करते थे

⑤ **नेयताल थिनई** ÷ मछली पकड़ना और नमक संग्रह करना (क्योकि ये coast (तट) के पास है)

PARMAR SSC

→ प्रत्येक थिनाई का एक मुखिया होता था जिसे 'मुवेंदर' कहा जाता था।

→ ये मुवेंदर आपस में लड़ना शुरु किए तो ये बँट जाते है → चेर, चोल और पांड्य में

→ ये वो time आ चुका है महाजनपद वाला (जब मगध शासक कर रहा था)

→ ये चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और अशोक वाला समय आ गया है।

→ बिन्दुसार ÷ 'दो समुद्रो के बीच की भूमि का विजेता' कहलाता है (South India मे किया)

→ अशोक शिलालेख में भी चेर, चोल और पांड्य का जिक्र मिलता है।

→ लेकिन चेर को केरलपुत्र लिखा गया था।

* सत्यपुत्र के बारे में वर्णित था।

* चोल और पांड्य के बारे मे भी वर्णित था।

→ चेर केरल में शासन कर रहे थे। इनके शिलालेख में ताम्रपर्णि भी लिखा था ये श्रीलंका के लोगो को बोला गया था।

- ताम्रपर्णि = (श्रीलंका के लोग)

* चेर (Cheras) *

→ शासन कर रहे थे ÷ केरल (Mainly) और तमिलनाडु (थोड़ा) वाले क्षेत्र में।

→ Imp. राजधानी ÷ → वंज्जी / वंजी (Vanjji)

→ Imp. बंदरगाह शहर (Port cities) → मुजिरिस / मुचिरिस और टोंडी (मुख्य रुप से व्यापार के लिए)

→ ये रोमन के साथ व्यापर करते थे।

→ रोमन ने यहाँ पर एक मन्दिर बनवाया → ऑगस्टस मंदिर (ग्रीक भगवान)

→ प्रतीक (Symbol) ÷ → धनुष और बाण (ये धनुष और बाण से खुद को दिखाते थे)

→ महानतम चेर शासक → 'सेनगुट्टुवन'

→ इन्हें लाल चेर (Red cheras) के नाम से भी जानते है।

→ ये लोग केन्नगी की पूजा करते थे।
(शुद्दता की देवी)

* चोल (Cholas) *

इनको कहा जाता है

- 'चोलमण्डलम' [चोल कोरोमण्डल तट में ही शासन कर रहे थे ∴ चोलमण्डलम कहा जाता]

→ ये पांड्य के उत्तर-पूर्व (North-east) में शासन करते थे।

→ यहाँ दो नदियाँ बहती है → पेन्नार और वेल्लार (वर्तमान में :- आंध्रप्रदेश में)

→ इन दो नदियों के बीच में ये शासन कर रहे थे।

→ राजधानी :- उराइयुर (Uraiyur) और पुहर (Puhar)

पुहर → इसको कावेरीपट्टनम के नाम से जानते हैं। ये एक बंदरगाह शहर (Port city) थी इन लोगो की। जहाँ से ये व्यापार करते थे।

→ ये लोगो ने कपास के बने कपडो में (सूती कपडो) व्यापार करते थे।

→ Navy के लिए बहुत जाने जाते है (efficient थी)

→ सबसे प्रारम्भिक शासक :- एलारा

→ सबसे महानतम शासक (Greatest Ruler) :- कराईकल → क्योंकि इन्होंने 'वेन्नी का युद्ध' लड़ा।

- चेर और पांड्य मिलकर इनको हराना चाहते थे लेकिन हरा नहीं पाए

→ प्रतीक :- बाघ (Tiger)

PARMAR SSC

* पांड्य (Pandyas) *

- पांड्य 'तमिलनाडु' में शासन कर रहे थे।
- राजधानी :→ मदुरई (वैगई नदी के तट पर)
  - → भारत की सबसे दक्षिणी नदी
  - → कावेरी से भी नीचे है ये।
- प्रतीक :→ मछली
  (Emblem)
- सबसे पहले इनके बारे में मेगास्थनीज की पुस्तक में उल्लेख किया गया।
- मेगास्थनीज ने बताया कि ये मोतियो (Pearls) के व्यापार के लिए प्रसिद्द थे।
- इन्होंने रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार किया।
- इनका बंदरगाह शहर (पत्तन) (Port city) → कोरकई (korkai)

* समाज (Society) *

- यहाँ पर properly developed वर्ण व्यवस्था नही थी।
- समाज लेकिन 3 वर्गों में बँटा गया

तमिल text में इन नामों से जाना जाता

- (1) शासक वर्ग (Ruling class) → अरासर
- (2) धनी वर्ग (rich class) → 'वेल्लालर'
- (3) निम्न वर्ग → 'कादिसियार'

PARMAR SSC